भगवतीसूत्र भा. २ का विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
	पहले शतकका छट्ठा उद्देशा	
१	सूर्यदर्शन की वक्तव्यता और सूर्यके प्रकाशक्षेत्रका निरूपण	१–१६
२	लोकान्त अलोकान्त और स्पर्शनका निरूपण	१७–२७
३	माणातिपातादि १८ अठारह पापस्थान क्रियाका वर्णन	२८–३९
४	लोक और अलोकादि विषयमें ' रोह ' नामके अनगार और महावीरस्वामीके प्रश्नोत्तरका निरूपण	४०–६३
५	लोकस्थितिका निरूपण	६४–७७
६	जीव और पुद्गलके बन्धका निरूपण	७८–८४
७	सूक्ष्म स्नेहकायका निरूपण	८५–८८
	सातवां उद्देशक	
८	सातवे उद्देशेके विषयोंका निरूपण	८९–९२
९	नैरयिकोंकी उत्पत्त्यादिका निरूपण	९३–११२
१०	नैरयिकोंकी उद्वर्त्तना आदिका निरूपण	११३–१२३
११	विग्रहगतिका निरूपण	१२४–१३०
१२	च्यवनसूत्रका निरूपण	१३१–१३५
१३	गर्भके स्वरूपका निरूपण	१३६–१५४
१४	गर्भस्थ जीवके गत्यन्तरका निरूपण	१५५–१७४
	आठवे उद्देशेका प्रारंभ	
१५	आठवे उद्देशाके विषयोंका विवरण	१७५
१६	एकान्तबालके स्वरूपका निरूपण	१७६–१८२
१७	एकान्तपण्डितके स्वरूपका निरूपण	१८३–१९२
१८	मृगघातक पुरुषादिके स्वरूपका निरूपण	१९३–२००
१९	मृगघातकपुरुषादिके क्रियास्वरूपका निरूपणम्	२०१–२१८

२०	पुरुषघातकके क्रिया स्वरूपका निरूपण	२१८–२२२
२१	विजयपराजयके स्वरूपका निरूपण	२२३–२२६
२२	वीर्यके स्वरूपका निरूपण	२२७–२३८

नववे उद्देशेका प्रारंभ

२३	नववे उद्देशेकी अवतरणिका	२३९–२४९
२४	गुरुत्वादिके स्वरूपका निरूपण	२५०–२७६
२५	निर्ग्रन्थके स्वरूपका निरूपण	२७७–२८१
२६	अन्य मतके स्वरूपका निरूपण	२८२–२९३
२७	कालस्यवेषिकपुत्रके प्रश्नोत्तरका निरूपण	२९४–३३४
२८	अप्रत्याख्यानके स्वरूपका निरूपण	३३५–३३८
२९	आधाकर्मके स्वरूपका निरूपण	३३९–३५४
३०	परिवर्तनके स्वरूपका निरूपण	३५५–३६१

दशवे उद्देशेका प्रारंभ

३१	दशवे उद्देशेकी अवतरणिका	३६२–३६६
३२	अन्ययूथिकोंके मतका निरूपण	३६७–३८८
३३	स्वमतके स्वरूपका निरूपण	३८९–४२९
३४	अन्यतीर्थिकों के क्रियाके विषयमें प्रश्नोत्तरका निरूपण	४३०–४३८
३५	उत्पातविरहका निरूपण	४३९–४४०

दूसरे शतकके पहला उद्देशेका प्रारंभ

३६	पहले उद्देशाकी अवतरणिका	४४१–४४४
३७	उच्छ्वासनिश्वासके स्वरूपका निरूपण	४४५–४६४
३८	वायुकायके आन–प्राण का निरूपण	४६५–४७६
३९	मृतादि अनगारके स्वरूप का निरूपण	४७७–४८१
४०	जीव, प्राण, भूत आदिके स्वरूपका निरूपण	४८२–४९८
४१	स्कन्दकके चारित्रका निरूपण	४९९–७५३

दूसरा उद्देशा—

४२ समुद्घातके स्वरूपका निरूपण ७५४–७७०

तीसरा उद्देशक

४३ तीसरे उद्देशेकी अवतरणिका ७७१–७७२
४४ पृथिव्यादिके स्वरूपका निरूपण ७७३–७७९

चौथा उद्देशा

४५ चौथे उद्देशेकी अवतरणिका ७८०–७८१
४६ इन्द्रियों के स्वरूपका निरूपण ७८२–७९२

पांचवा उद्देशा

४७ अन्य मतवादीयों के मतका खंडनपूर्वक स्वमतका निरूपण ७९३–८१३
४८ गर्भके स्वरूपका निरूपण ८१४–८१७
४९ कायभवस्थके स्वरूपका निरूपण ८१८–८१९
५० मनुष्यादि गर्भके कालका निरूपण ८२०
५१ जीव एक भवमें कितने पिताके पुत्र हो सकता हैं ?
इस विषयका निरूपण ८२१–८२९
५२ मैथुन सेवनसे असंयमके कारणका निरूपण ८३०–८३२
५३ तुङ्गिका नगरनिवासी श्रावकोंका वर्णन ८३३–८५१
५४ पार्श्वापत्यीयस्थविरोंका वर्णन ८५२–८७२
५५ पार्श्वापत्यीयस्थविरों के दर्शनोत्सुक जनसमूहका निरूपण ८७३–८८२
५६ स्थविरोंकी धर्मोपदेशना का निरूपण ८८३–९०२
५७ तुङ्गिका नगरीसे विहारके अनन्तर
पश्चापत्थीय स्थविरोंका वर्णन ९०३–९३७
५८ श्रमणपर्युपासनाके फलका निरूपण ९३८–९४५
५९ मृषावादीके स्वरूपका निरूपणम् ९४६–९५६

छट्ठा उद्देशा

६० भाषा के स्वरूप निरूपण ९५७–९६०

सातवां उद्देशा

६१ देव के स्वरूप का निरूपण ९६१–९७२

आठवां उद्देशा

६२ आठवे उद्देशक की अवतरणिका ९७३
६३ चमरेन्द्र की सुधर्मासभादि आदिका निरूपण ९७४–१००१

नववां उद्देशा

६४ समय और क्षेत्र का निरूपण १००२–१००६

दशवा उद्देशा

६५ दशवे उद्देशक के विषयों का निरूपण १००७–१००९
६६ अस्तिकाय के स्वरूप का निरूपण १०१०–१०४९
६७ उत्थानादि के स्वरूप का निरूपण १०५०–१०६०
६८ आकाश के स्वरूप का निरूपण १०६०–१०८०
६९ धर्मास्तिकाय के प्रमाण और स्पर्शना का निरूपण १०८१–१०९९

समाप्त